# मानवेन्द्रनाथ राय की मानववादी अवधारणा

*डॉ0 ज्योत्स्ना गौतम,*

*एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग,नवयुग कन्या महाविद्यालय, लखनऊ, उ0प्र0*

## शोध सारांश

*मानवेन्द्रनाथ राय एक प्रसिद्ध राष्ट्रवादी, राजनीतिक चिन्तक एवं क्रान्तिकारी रहे, जिन्होंने भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में अपना वैचारिक और क्रान्तिकारी योगदान दिया। मानवेन्द्रनाथ राय के मानववाद से सम्बन्धित विचार राजनीति विज्ञान को प्रमुख देन है। मानववाद व्यक्तिवाद का नवीन रूपान्तरण है। राय द्वारा जगत में किसी पारलौकिक सत्ता की सर्वश्रेष्ठता को स्वीकार न कर मनुष्य की क्षमता पर अधिक विश्वास किया गया है, मनुष्य के जीवन में धर्म के महत्त्व को उन्होंने अस्वीकार किया हैं, लेकिन वह नैतिक मूल्यों की सर्वोच्चता में विश्वास करते हैं, जिनका निर्धारण व्यक्ति स्वयं के तर्क और विवेक द्वारा सामाजिक कल्याण के दृष्टिकोण से करे। राय के मतानुसार समाज के संगठन का आधार भौतिकवादी तत्त्व हो, न कि नैतिक और बुद्धिवादी तत्व। वह समाज की पुनर्संरचना के पक्षधर थे, जिसके लिए वह दार्शनिक क्रान्ति को आवश्यक मानते थे। वह वैज्ञानिक, दृष्टिकोण, व्यक्तिगत स्वतन्त्रता लोकतन्त्र एवं विश्व राष्ट्रवाद के प्रबल समर्थक थे।*

**मुख्य शब्द –** *मानववाद, मानव, स्वतन्त्रता, वैज्ञानिक, विवेक*

बीसवीं सदी के प्रसिद्ध दार्शनिक क्रान्तिकारी, राजनैतिक सिद्धान्तकार श्री मानवेन्द्रनाथ राय का जन्म 21 मार्च 1887 को बंगाल में हुआ था, ये विवेकानन्द, स्वामी रामतीर्थ तथा दयानन्द सरस्वती, विपिन चन्द्र पाल, अरविन्द घोष, सावरकर और सुरेन्द्रनाथ बनर्जी आदि महानुभावों के विचारों से प्रभावित थे। राय ने अपना प्रारम्भिक जीवन एक क्रान्तिकारी युवा के रूप में आरम्भ किया, 1905 के बंग भंग आन्दोलन से इनका सम्बन्ध रहा। इन्होंने अपनी उच्च शिक्षा जादवपुर विश्वविद्यालय से ग्रहण की। 1907 में इन्हें कलकत्ता के पास चिंगारी पोठा रेलवे स्टेशन की डकैती, हावड़ा षड्यंत्र काण्ड एवं गार्डन डकैती काण्ड में शासन द्वारा गिरफ्तार किया गया। जेल से मुक्त होने के उपरान्त क्रान्तकारियों की सहायता के लिए क्रान्तिकारी जतिन मुखर्जी द्वारा इन्हें जर्मनी भेजा गया, किन्तु ये जर्मनी पहुँचने के उपरान्त अमेरिका चले गये, वहाँ इन्हें अपनी पहचान छुपाने में असफल रहने के कारण गिरफ्तारी देनी पड़ी। जेल से विमुक्त होने के उपरान्त इन्होंने मैक्सिको जाकर समाजवादी शक्तियों को संगठित कर समाजवादी आन्दोलन को अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप देने का प्रयास किया गया। राय ने कम्युनिस्ट इण्टरनेशनल के प्रतिनिधि माकेल गोरोडिन की सहायता से कम्युनिस्ट पार्टी को स्थापित किया, तत्पश्चात् ये मैक्सिको से रूस पहुँचकर लेनिन के शिष्य बने, लेकिन लेनिन सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण उन्हें अफगानिस्तान का राजदूत नहीं बना सके। राय के द्वारा 'कामिनटर्न' के लिए प्रशंसनीय कार्य किये गये, यह भारत की स्वतन्तत्रता के लिए कार्यक्रम तैयार करने के उद्देश्य से 1922 में बर्लिन चले गये। वे भारत में दो रूपों में कार्यक्रम को क्रियान्वित करना चाहते थे, प्रथम भारत से ब्रिटिश सरकार की कांग्रेस के साथ मिलकर समाप्ति द्वितीय कांग्रेस कांग्रेस को चुनौती देना, इनके

द्वारा दोनों नीतियों का कार्यक्रम रूप में अनुसरण किया गया, किन्तु दुर्भाग्य से इन्हें इस दिशा में विशेष सफलता नहीं मिली, क्योंकि कांग्रेस का नेतृत्व गाँधीजी एवं अन्य उनके सहयोगियों द्वारा किया जा रहा था। राय के द्वारा भारत में साम्यवादी कार्यकलापों को प्रेरित किया जा रहा था, इसी मध्य 'कामिनटर्न' के साथ हुए मतभेदों के परिणामस्वरूप राय इससे विलग हो गये। तत्पश्चात् राय ने कांग्रेस से सम्पर्क स्थापित किया और जर्मनी में कांग्रेस की शाखा स्थापित करने का प्रयास किया। ब्रिटिश सरकार द्वारा राय को अपने पूर्व कृत्यों के कारण सन् 1930 में भारत लौटने पर जेल भेज दिया गया, जहाँ इन्होंने 'फिलोसोफिकल कोन्सीक्वेंसेस ऑफ मार्डन साइंस' नामक ग्रन्थ की रचना की।

जेल से विमुक्ति के पश्चात् राय द्वारा कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण की, किन्तु 1940 में कांग्रेस के अध्यक्ष पद पर चयनित होने के कारण इन्होंने अपने आपको कांग्रेस से विलग कर रेडिकल डेमोक्रेटिक पार्टी को एक नये दल के रूप में स्थापित किया। राय ने कांग्रेस पर आरोप लगाया कि गाँधीजी के नेतृत्व में कांग्रेस चरखा कातने वालों का संघ बनती जा रही है, द्वितीय विश्वयुद्ध के समय इन्होंने फासीवाद का विरोध भी किया।

भारत में राय ने 'इण्डियन फेडरेशन ऑफ लेबर' का भी गठन किया, उनका विश्वास था कि समाज की प्रगति के लिए श्रमिकों की मुक्ति आवश्यक है तथा उनका यह भी मानना था कि पुनर्जागरण एवं दार्शनिक क्रान्ति के बिना देश का जनमानस लोकतन्त्र के मूल सिद्धान्तों को ग्रहित नहीं कर सकता, इसलिए उन्होंने एक नया दर्शन दिया जो मौलिक मानववाद, वैज्ञानिक मानववाद, नवमानववाद, क्रान्तिकारी मानववाद आदि नामों से विख्यात है। राय द्वारा भारतीय पुनर्जागरण के आन्दोलन को जन–जन के समीप पहुँचाने में सक्रिय भूमिका का निर्वाह किया गया। वास्तव में मानववाद को दिशा दिखाना ही इस आन्दोलन का उद्देश्य था। 25 जनवरी 1954 में इनका शरीरान्त हो गया।

राय के विचारों में वैचारिक स्थिरता का सदैव अभाव रहा, उनके विरोधी विचार भी उनके प्रेरक स्रोत बने, औपनिवेशिक युग में राय की राष्ट्रवादी के रूप में महती भूमिका रही। ये मार्क्सवाद से प्रभावित रहे, किन्तु बाद में नवीन मानवतावाद के सिद्धान्त को प्रतिपादित किया जो व्यक्तिवाद का नया स्वरूप है।

एम0एन0 राय ने इण्डिया इन ट्रांजिशन, इन्डियाज प्रॉब्लम्स एण्ड देयर सॉल्युशन, वन ईयर ऑफ नॉन को–आपरेशन, दि फ्यूचर ऑफ इण्डियन पालिटिक्स आदि प्रमुख पुस्तकों की रचना की। राय के मौलिक मानववाद को समझने से पूर्व प्राचीन मानववाद को समझना आवश्यक है।

मानववाद एक प्राचीन विचारधारा है जिसे यूनान के स्टोइक्स तथा एपीक्यूरियन चिन्तकों से लेकर आधुनिक चिन्तकों द्वारा अपने शब्दों में व्याख्यायित किया जाता रहा है। यह विचारधारा प्राचीन काल से ही मानव को केन्द्रबिन्दु मानकर चलती है तथा मानव को सर्वश्रेष्ठ तथा सभी कार्यों का आधार मानती है। भारत में चार्वाक और बौद्धदर्शन में मानवतावाद की छाप दृष्टव्य है किन्तु यूरोप में मानववादी चिन्तन का स्वरूप पुनर्जागरण काल के उपरान्त वैज्ञानिकता को प्राप्त कर सका, फलस्वरूप ईश्वर की अपेक्षा मानव की महत्ता को अधिक प्रश्रय दिया जाने लगा। कुछ पश्चिमी विचारक, यथा–डेकार्ट, स्पिनोजा, कान्ट, वोल्टेयर द्वारा मानव को ईश्वर की अपेक्षा अधिक महत्ता दी गयी, उस समय के दार्शनिक चिन्तन का मुख्य बिन्दु वह मानव था जो मानवीय अनुभवों में विश्व को बुद्धि द्वारा ग्रहित करना चाहता था। इस प्रकार विवेकपूर्ण मानवीय तथा वैज्ञानिक विचारों की प्रबलता बढ़ी तथा मनुष्य द्वारा चिन्तन एवं जीवन की सीमाओं

से मुक्त होने के मार्ग पर चलना आरम्भ किया गया, आधुनिक युग में परिवर्तित मानववाद के स्वरूप के अन्तर्गत यह विचार प्रकाश में आया कि मानव स्वयं लक्ष्य है, मानव ही ध्यानातीत के चिन्तन का मुख्य बिन्दु है वही सार्वभौम दृष्टि है और उसकी अन्तर्दृष्टि ही उसका साध्य है। यह विचारधारा मानव के श्रेष्ठ होने की पुष्टि करती है, क्योंकि मानव में पूर्णता को प्राप्त करने की सामर्थ्य है, यह विचार सामाजिक हितों को वरीयता देता है और मानव इसकी प्राप्ति हेतु विवेक को ही अज्ञानता को दूर करने के एकमात्र माध्यम के रूप में देखता है। मानववाद का उद्देश्य मानव की श्रेष्ठता स्थापित करना है।

मानवेन्द्रनाथ राय प्राचीन मानववाद में धर्म की उत्कृष्टता से सहमत नहीं थे, वे मानववाद और धर्म के सम्बन्धित स्वरूप को मानव के लिए घातक समझते थे, उनका मत था कि मनुष्य धर्म से प्रभावित होकर अन्धविश्वासी हो जाता है, अदृश्य शक्ति में आस्था के कारण अपने आपको निःसहाय अनुभव करता है। इससे उसकी सृजनात्मकता प्रभावित होती है तथा न्यायोचित निर्णय लेने में वह असमर्थ रहता है। इस प्रकार व्यक्ति की स्वतन्त्रता में धर्म एक बड़ी बाधा है, जिसके कारण उसका विवेकशील चरित्र धूमिल हुआ है। इस स्थिति में आध्यात्मिक स्वतन्त्रता ही मानव का उचित पथ–प्रदर्शन कर सकती है, ज्ञान–विज्ञान एवं धर्मनिरपेक्ष सोच ही मनुष्य को इस निराधार विश्वास से विमुक्त कर उसका बहुमुखी विकास कर सकती है।

राय मानवीय सत्ता को ही सर्वोपरि सत्ता स्वीकृत करते हैं, इसीलिए उन्होंने मानववाद के सम्बन्ध में नये दृष्टिकोण को महत्त्व दिया है। उन्होंने मनुष्य को किसी रहस्य अथवा विश्वास का विषय नहीं बनाया, उन्होंने मनुष्य की महत्ता को स्वीकार करते हुए कहा कि मनुष्य ही मूल है। वह प्रत्येक मापदण्ड का आधार है, वह सभी क्षमताओं से परिपूर्ण है, इसीलिए उसे किसी सत्ता के आधिपत्य में नहीं किया जाना चाहिए। राय का विश्वास था कि मनुष्य मुख्य रूप से स्वयं से सम्बन्धित है, इसीलिये उसे आत्मा–परमत्मा, दैवीय इच्छा तथा अन्य प्राकृतिक शक्तियों के अधीन नहीं किया जा सकता। राय ने मानव को इस विचार के प्रति भी सचेत किया कि ग्रह और नक्षत्र हमारे चरित्र को प्रभावित करते हैं या वे हमारे भाग्य का निर्धारण करते हैं। उनका मत था कि मनुष्य एक विवेकशील एवं नैतिक प्राणी होने के कारण अपने भाग्य का स्वयं निर्माता है, वह इतना सामर्थ्यवान है कि वह विश्व को अति श्रेष्ठ एवं सुन्दर रूप दे सकता है, इसलिए मानव प्रत्येक वस्तु का मापदण्ड है। राय का विश्वास था कि मनुष्य स्वभाव से विवेकपूर्ण नैतिक प्राणी होने के कारण वह एक उन्मुक्त और न्यायपूर्ण सामाजिक व्यवस्था के निर्माण में समर्थ है किन्तु समकालीन विश्व की नैतिकता और चिन्तन पतित हो चुका है तथा सार्वजनिक जीवन में नैतिक मूल्यों के पतन के कारण, स्वस्थ उन्मुक्त और न्यायपूर्ण सामाजिक व्यवस्था के लिए अथक प्रयत्न करने होंगे। इसके लिए वे वर्तमान साामजिक दर्शन राजनीतिक सिद्धान्तों के नवीनीकरण पर इस प्रकार बल देते थे, जिससे सामाजिक जीवन में नैतिक मूल्यों की सर्वोच्च महत्ता प्रतिष्ठित हो सके तथा मानव अपने गौरव को पुनः अनुभव कर सके।

राय का मत है कि व्यक्ति के विवेकशील प्राणी होने के कारण आज के वैज्ञानिक युग में अध्यात्मवाद का कोई महत्त्व नहीं है। वह मानव की बौद्धिक और क्रियात्मक शक्ति की उच्चता में विश्वास करते थे, उन्होंने माना कि अपने चिन्तन को वैज्ञानिक बनाने के लिए प्रत्येक विषय को तर्क और विवेक की कसौटी पर कसना होगा। राय का विचार था कि व्यक्ति अपनी विवेकशीलता के आधार पर नैतिक सिद्धान्त प्रस्थापित कर सकता है। राय ने इस विषय में कहा कि, ''व्यक्ति के जीवन और उसके व्यक्तित्व में तर्क और विवेक सार्वभौमिक समन्वय की प्रतिध्वनि है।'' राय के अनुसार आधुनिक वैज्ञानिक शोधों से ज्ञात होता

कि मनुष्य में कोई अतिप्राकृतिक तत्व नहीं है, वह इस भौतिक जगत का ही एक अंग है, इसलिए व्यक्ति को उन्होंने किसी भी अतिप्राकृतिक सत्ता के अधीन न करके उसे विवेकशील प्राणी माना है।

राय ने धर्म एवं नैतिकता को पृथक रूप में स्वीकार किया है, क्योंकि धर्म से व्यक्तियों में मूल्यों के अधीन होने की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिलता है और धर्म वर्तमान युग में रूढ़िगत परम्परा से कुछ अधिक नहीं रह गया है। आधुनिक जीवन और राजनीतिक व्यवहार में धर्म की वास्तव में कोई भूमिका नहीं रह गई है। वैज्ञानिक विकास से यह ज्ञात हो गया है कि मानव स्वभाव विकासमान भौतिक उत्थान के धरातल का फल है, बुद्धि मानव प्रकृति का विशिष्ट एवं मौलिक तत्व है।

राय के अनुसार नैतिकता एक आन्तरिक वस्तु है, जिसका पालन व्यक्ति को समाज कल्याण की भावना से करना चाहिए, किसी अन्य प्रकार के भय से नहीं। राय का मत है कि बिना नैतिकता के हम मनुष्य को कल्पित नहीं कर सकते, बुद्धिवादिता और नैतिकता के अभाव में मनुष्य को मनुष्य नहीं कहा जा सकता है। उन्होंने राजनीति का आधार नैतिकता को माना, उनका विचार था कि राजनीति में नैतिकता का पालन किया जाना चाहिए। उनकी नैतिकता की प्रकृति धर्मनिरपेक्षवादी है, उन्होंने व्यक्ति के सार्वजनिक जीवन के नैतिक पतन के लिए शक्ति प्रधान राजनीति को उत्तरदायी माना और इस संकट के निवारण हेतु उन्होंने राजनीतिक दलों की समाप्ति को आवश्यक माना। अपने इस मत के कारण उन्होंने 1948 में 'रेडिकल डेमोक्रेटिक पार्टी' को भंग कर दिया।

राय भौतिक आधार पर संगठित समाज के समर्थक थे। उनका विचार था कि समाज का आधार नैतिकवादी और बुद्धिवादी होने पर मानव के विकास की बाधा में शिथिलता होगी और मानव अधिक स्वतन्त्रता का उपभोग कर सकेगा। राय ने समाज के पुनर्निर्माण पर बल दिया, वे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में वैज्ञानिक दृष्टिकोण को उपयोगी समझते थे। उनका मत था कि हम भूमि के उत्पादन में खाद और सिंचाई के माध्यम से वृद्धि कर सकते हैं, धार्मिक कर्मकाण्डों और अनुष्ठानों द्वारा नहीं। वे समस्याओं के निराकरण के लिए तर्कसंगत दृष्टिकोण पर अधिक बल देते थे, उनका विचार था कि इससे मानव सभ्यता के विकास के लिए उन्मुक्त वातावरण उदित हो सकता है, वे समाज को साधन समझते थे, इसीलिए उनका मत था कि सभी क्रियाकलापों का निर्धारण व्यक्ति की स्वतन्त्रता को अधिक से अधिक पुष्ट करने के लिए होना चाहिए। वे समाज की पुनर्संरचना के लिए दर्शनिक क्रान्ति को आवश्यक मानते थे।

राय की दृष्टि में व्यक्ति समाज का मूल आदर्श है तथा स्वतन्त्रता मानववाद का आधार है। वे व्यक्ति की स्वतन्त्रता प्राप्ति की इच्छा को जन्मजात मानते थे, क्योंकि व्यक्ति स्वतन्त्रता के लिए किसी भी सीमा तक जा सकता है। मानवेन्द्रनाथ के अनुसार ''समस्त ज्ञान उपलब्धियाँ, सांस्कृतिक प्रगति, वैज्ञानिक खोजें, कलात्मक सृजनशीलता, आत्मा से अभिप्रेरित है। स्वतन्त्रता के लिए मानव की इच्छा अमर व नित्य है।'' राय के अनुसार स्वतन्त्रता, कानून के साथ सामंजस्य बैठाने में देखी जा सकती है, वे मानव सभ्यता एवं मानवहित के लिए राज्य द्वारा व्यक्ति की स्वतन्त्रता को प्रतिबन्धित करने के पक्ष में नहीं थे। वे धर्म एवं अन्धविश्वास को मानव स्वतन्त्रता के मार्ग में बड़ी बाधा मानते थे, उनका विचार था कि धर्म की बढ़ती कट्टरता सामाजिक संस्थानों की गतिहीनता स्वतन्त्रता की क्षति का कारक है। राय के नवीन मानववाद का उद्देश्य मनुष्य की स्वतन्त्रता तथा व्यक्तित्व का विकास था।

राय लोकतन्त्र के समर्थक तथा शक्तियों के केन्द्रीकरण के विरोधी थे, इसीलिए वे

राजनीतिक शक्ति तथा अर्थव्यवस्था के विकेन्द्रीकरण पर बल देते थे। जनहित के लिए उन्होंने दलविहीन लोकतन्त्र का समर्थन किया था, जिसमें जनता राजनीतिक सत्ता की मालिक हो, नैतिक लोकतन्त्र का सिद्धान्त भी इनके द्वारा प्रस्तुत किया गया। इन्होंने अपने मौलिक लोकतन्त्र में मानववाद को पुष्ट कर व्यक्ति को वरीयता दी।

राय ने नव मानववाद में व्यक्ति को संकीर्ण राष्ट्रवाद की परिधि से ऊपर उठाकर राष्ट्रवाद के विकास के लिए विश्वबन्धुत्व की भावना पर बल दिया। वह विश्वसंघ की स्थापना के भी समर्थक थे। उन्होनें लिखा कि, ''नवीन मानववाद विश्व राष्ट्रवादी है, आध्यात्मिक दृष्टि से स्वतन्त्र व्यक्तियों का विश्व राज्य, राष्ट्रीय राज्यों की सीमाओं से परिबद्ध नहीं होगा, वे राज्य चाहे पूंजीवादी, फासीवादी, समाजवादी, साम्यवादी अथवा अन्य प्रकार के क्यों न हों। राष्ट्रीय राज्य मानव के बीसवीं शताब्दी के पुनर्जागरण के आघात से धीरे–धीरे विलुप्त हो जायेंगे।'' राय ने विश्व राष्ट्रवाद तथा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद के मध्य अन्तर के विषय में। उन्होंने आध्यात्मिक समाज अथवा विश्व राष्ट्रवादी मानवतावाद का समर्थन किया, अन्तर्राष्ट्रीयतावाद में प्रथम राष्ट्रीय राज्यों के अस्तित्व का विचार है, जबकि राय का विश्वास था कि एक सच्ची विश्व सरकार की स्थापना राष्ट्रीय राज्यों का निराकरण करके की जा सकती है।

मानवेन्द्रनाथ राय के मानववादी विचारों के अवलोकन के पश्चात निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि मानवेन्द्रनाथ राय का मानववाद व्यक्ति के व्यक्तिगत अस्तित्व को सामाजिक जीवन में उसके अस्तित्व से सम्बद्ध कर जीवन का नवीन मार्ग प्रदर्शित करता हैं, जिसमें ईश्वरीय अथवा दैवीय शक्ति का कोई स्थान नहीं है, व्यक्ति स्वयं अपने कार्यों और उसके प्रतिफल का उत्तरदायी है, कोई अदृश्य शक्ति नहीं, उनके मतानुसार धर्म व्यक्ति की स्वतन्त्रता में बाधा पहुँचाता है। राय मानव के सुखमय जीवन में आने वाली बाधाओं को दूर करने के लिए सामाजिक संरचना को पुनःसंरचित करना चाहते हैं, उनका मानना था कि उन्मुक्तपूर्ण और न्यायपूर्ण सामाजिक व्यवस्था के लिए वर्तमान सामाजिक एवं राजनीतिक दर्शन में परिवर्तन आवश्यक है, जिसके लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण का सहारा लेना चाहिए। वह अतार्किक, अवैज्ञानिक एवं परम्परावादी सभी प्रकार के विचारों के परित्याग का विचार प्रस्तुत करते हैं। उन्होंने मानववाद को कठोर सिद्धान्तों का संग्रह नहीं बनाया है अपितु उसे आवश्यकतानुसार परिवर्तनीय और विकसित प्रकृति का सिद्धान्त बताया है। राय का मानववाद मनुष्य को सम्पूर्ण सृष्टि का केन्द्रबिन्दु मानता है। उनका मानना था कि मनुष्य विवेकवान, सृजनशील, नैतिक और स्वयं में पूर्ण है। वह मनुष्य को किसी वर्ग, राष्ट्र या अन्य किसी प्रकार के बंधन में नहीं बाँधना चाहते हैं। उन्होंने संकीर्ण राष्ट्रवाद के स्थान पर विश्वबन्धुत्व एवं विश्व संघ के विचार का समर्थन किया है। व्यक्ति के सार्वजनिक जीवन में नैतिक पतन के लिए उन्होंने शक्ति प्रधान राजनीति को उत्तरदायी माना है, जिसके समाधान के लिए उन्होंने दलविहीन लोकतन्त्र की स्थापना का मार्ग बताया है।

इस प्रकार मानवेन्द्रनाथ राय का मानववाद का दर्शन भौतिकवादी, प्रकृतिवादी एवं बुद्धिवादी विचारों का सम्मिश्रण है। मानव, बुद्धि, विवेक, नैतिकता, वैज्ञानिक, दृष्टिकोण पर आधारित उनकी विचारधारा विचार जगत तक ही सीमित रह गयी, जनसाधारण के मध्य इसे लोकप्रियता प्राप्त नहीं हुई।

## सन्दर्भ ग्रन्थ

1. अवस्थी डॉ0 ए0, अवस्थी डॉ0 आर0के0, आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं

राजनीतिक चिन्तन, रिसर्च पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2002

2. गाबा ओ0पी0, भारतीय राजनीतिक विचारक, नेशनल पेपर बैक्स, नई दिल्ली, 2017
3. नागर पुरुषोत्तम, आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1989
4. वर्मा वी0पी0, आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा, 2010–11
5. Roy M.N., The Problem of Freedom
6. Roy M.N. Reason, Romanticism and Revolution, Vol. II